दैनिक नगर छाया
www.nagarchhaya.com
कानपुर छाया
कानपुर
18 अक्टूबर, 2021
2

धान फसल की बढ़नी घास का नियंत्रण सम्भव : डॉ. विनोद दोहरे

कानपुर (नगर छाया समाचार)। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के अधीन संचालित अनौगी स्थित कृषि विज्ञान केंद्र के सस्य वैज्ञानिक ने बताया कि जनपद में धान की खेती बड़े पैमाने पर खरीफ मौसम में की जाती है परंतु विगत कई वर्षों से धान में बढ़नी घास एक बड़ी समस्या बनकर उभरी है। इसके नियमित नियंत्रण न करने से धान में 50-70त तक नुकसान देखा गया है। जिससे किसानों को आर्थिक क्षति होती है इस समस्या को ध्यान में रखते हुये कृषि विज्ञान केंद्र के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ विनोद दोहरे ने कृषकों के प्रक्षेत्र पर सफल परीक्षण किया है। डॉ दोहरे ने बढ़नी घास या लेप्चलोआ चाईनेन्सिस का सफल नियंत्रण फिनोक्सिप्रोप इथाइल खरपतवारनाशी से करके जनपद व आसपास के किसानों के लिए आशा की नई उम्मीद जगाई है। इसके सफल परीक्षण जनपद के कई गांवों में किये गए हैं। इसी श्रृंखला में प्रक्षेत्र दिवस का आयोजन पचपुखरा गांव में करके दर्जनों किसानों को बताया गया। कि कैसे किसान भाई अपनी धान की फसल को इस बढ़नी घास से बचा सकते हैं और आर्थिक नुकसान से बच सकते हैं। केंद्र के अध्यक्ष एवं वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ वी.के. कनौजिया ने कहा कि जनपद में केंद्र के वैज्ञानिक लगातार कृषकों के प्रक्षेत्रों पर भ्रमण कर किसानों को जागरूक कर रहे हैं। उन्होंने जनपद के किसानों से अपील की है कि वे व्यक्तिगत अथवा कृषि वैज्ञानिकों के मोबाइल पर संपर्क कर कृषि तकनीकी लेते रहें,जिससे खेतीबाड़ी से किसान स्वावलंबी बनकर आत्मनिर्भर हो सकें।प्रक्षेत्र दिवस के अवसर पर केंद्र के वरिष्ठ मृदा वैज्ञानिक डॉ खलील खान व मौसम वैज्ञानिक अमरेंद्र यादव सहित किसान राहुल सिंह, के पी सिंह, रामनारायण आदि किसान उपस्थित रहे।

Sign in to edit and save changes to this file.

शाश्वत टाइम्स
हिन्दी दैनिक
वर्ष : 6, अंक : 190 पृष्ठ : 12
कानपुर महानगर, सोमवार
19 अक्टूबर, 2021
मूल्य ₹ 3.00
www.shashwattimes.com

धान फसल की बढ़नी घास (लेप्चलोआ चाईनेन्सिस) का नियंत्रण सम्भव - डॉ विनोद दोहरे

शाश्वत टाइम्स

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के अधीन संचालित अनौगी स्थित कृषि विज्ञान केंद्र के सस्य वैज्ञानिक ने बताया कि जनपद में धान की खेती बड़े पैमाने पर खरीफ मौसम में की जाती है। परंतु विगत कई वर्षों से धान में बढ़नी घास एक बड़ी समस्या बनकर उभरी है। इसके नियमित नियंत्रण न करने से धान में 50-70 प्रतिशत तक नुकसान देखा गया है। जिससे किसानों को आर्थिक क्षति होती है। इस समस्या को ध्यान में रखते हुये कृषि विज्ञान केंद्र के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ विनोद दोहरे ने कृषकों के प्रक्षेत्र पर सफल परीक्षण किया है। डॉ दोहरे ने बढ़नी घास या लेप्चलोआ चाईनेन्सिस का सफल नियंत्रण फिनोक्सिप्रोप इथाइल खरपतवार नाशी से करके जनपद व आसपास के किसानों के लिए आशा की नई उम्मीद जगाई है। इसके सफल परीक्षण जनपद के कई गांवों में किये गए हैं। इसी श्रृंखला में आज प्रक्षेत्र दिवस का आयोजन पचपुखरा गांव में करके दर्जनों किसानों को बताया गया। कि कैसे किसान भाई अपनी धान की फसल को इस बढ़नी घास से बचा सकते हैं। और आर्थिक नुकसान से बच सकते हैं। केंद्र के अध्यक्ष एवं वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ वी.के. कनौजिया ने कहा कि जनपद में केंद्र के वैज्ञानिक लगातार कृषकों के प्रक्षेत्रों पर भ्रमण कर किसानों को जागरूक कर रहे हैं। उन्होंने जनपद के किसानों से अपील की है। कि वे व्यक्तिगत अथवा कृषि वैज्ञानिकों के मोबाइल पर संपर्क कर कृषि तकनीकी लेते रहें। जिससे खेतीबाड़ी से किसान स्वावलंबी बनकर आत्मनिर्भर हो सकें। प्रक्षेत्र दिवस के अवसर पर केंद्र के वरिष्ठ मृदा वैज्ञानिक डॉ खलील खान व मौसम वैज्ञानिक अमरेंद्र यादव सहित किसान राहुल सिंह, के पी सिंह, रामनारायण आदि किसान उपस्थित रहे।

अमर उजाला
सोमवार ■ 18.10.2021
05
kanpur.amarujala.com

सीएसए के छात्रों को कॅरियर संबंधी टिप्स देंगे सीएस

कानपुर। भारतीय कंपनी सचिव संस्थान और चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय (सीएसए) सोमवार को एमओयू पर हस्ताक्षर करेंगे। संस्थान के कानपुर चैप्टर के चेयरमैन मनीष शुक्ला ने बताया कि भारतीय कंपनी सचिव संस्थान के राष्ट्रीय अध्यक्ष सीएस नागेंद्र डीराव और सीएसए के कुलपति डॉ. डीआर सिंह एमओयू के समय उपस्थित रहेंगे। एमओयू के तहत सीएसए के छात्रों को सीएस कॅरियर संबंधी टिप्स देंगे। संस्थान के देश में 72 चैप्टर, चार रीजनल काउंसिल, दो स्टडी रिसर्च सेंटर हैं। इसमें सीएसए का कोई भी छात्र या शिक्षक, फैकल्टी विजिट कर सकेगा। पुस्तकालय आदि में जा सकेंगे। सीएस संस्थान के छात्र सीएसए आ जा सकेंगे। शैक्षणिक गतिविधियों का आदान-प्रदान किया जाएगा। कार्यशालाएं कराई जाएंगी। टैक्स, श्रम कानून, कृषि उत्पादन से जुड़ी चीजें विशेषज्ञ बताएंगे। (ब्यूरो)